

न्यूज ब्रीफ

पुलिस ने कच्ची शराब
बनाते दो लोगों को पकड़ा

कांठ, अमृत विचार : थाना पुलिस ने कच्ची शराब बनाते दो लोगों को रोग हाथों पकड़ लिया। पुलिस ने उनके पास से 25 लीटर अवैध कच्ची शराब, उत्करण एवं दो मोहदाल बरामद किए हैं। थाना कांठ के ग्राम दरियापुर निवासी अमित राई बरामद एवं आकाश दोनों दरियापुर के जगल में कच्ची शराब बनाकर बेने का काम करते हैं। भुखार को थाना कांठ के प्रभारी निरीक्षक सुखा पाल सिंह को किसी विधि ने साना दी की दरियापुर के जंगल में अवैध शराब की भूमि घर रही है। थाना प्रभारी ने उन निरीक्षक गंगा शरांग, गोरी कुमार, मनू शर्मा की टीम बनाई और बताए गए स्थान पर छापा मारा तो वहां अवैध शराब बनाते हुए दोनों लोगों को मोके से पकड़ लिया। पुलिस ने उनके पास से 25 लीटर अपै मिश्रित कच्ची शराब की भूमि घर रही है। थाना प्रभारी ने उन निरीक्षक गंगा शरांग, गोरी कुमार, मनू शर्मा की टीम बनाई और बताए गए स्थान पर छापा मारा तो वहां अवैध शराब बनाते हुए दोनों लोगों को मोके से पकड़ लिया।

भुखार को आयोजित सम्मेलन में मुख्य अतिथि स्वामी यशवीर महाराज ने कहा कि हिंदू समाज की शक्ति उसकी एकता, संस्कार और संस्कृति में निहित है। आज आवश्यकता है कि समाज अपने मूल्यों को पहचाने, अपासी भेदभाव को त्यागकर संगठित हो और शराब बनाने के उत्करण दोहराने के बरामद किया। पुलिस उपरक दोनों को थाने ले आई और दोनों के खिलाफ संविधित धाराओं में अधियोग पंजीकृत कर बरामद उपरकण और सामान सर्वानुष्ठान उठाएं गिरपत्र कर न्यायालय भेज दिया है।

एकता और संस्कृति में निहित है समाज की शक्ति

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

अमृत विचार : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताव्दी वर्ष के उपलक्ष्य में ठाकुरद्वारा नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर परिसर में हिंदू सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया।

भुखार को आयोजित सम्मेलन में मुख्य अतिथि स्वामी यशवीर महाराज ने कहा कि हिंदू समाज की शक्ति उसकी एकता, संस्कार और संस्कृति में निहित है। आज

आवश्यकता है कि समाज अपने

मूल्यों को पहचाने, अपासी भेदभाव

बनाने के उत्करण दोहराने के बरामद

किया। पुलिस उपरक दोनों को थाने

ले आई और दोनों के खिलाफ संविधित

धाराओं में अधियोग पंजीकृत कर बरामद

उपरकण और सामान सर्वानुष्ठान उठाएं

गिरपत्र कर न्यायालय भेज दिया है।



सरस्वती विद्या मंदिर में हिंदू सम्मेलन को संबोधित करते स्वामी यशवीर जी महाराज।

आगे आएं। साथ ही लव जिहाद, लैड

जिहाद से सावधान रहते हुए भारत के हिंदुत्व को एक सूत्र में रहकर अपने धर्म संस्कारों की रक्षा करनी होगी।

अपनी जीवनस्था अवश्य बढ़ाए।

मुख्य वक्ता प्रांत प्रचार प्रमुख

सुरेंद्र ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

गोवरशली 100 वर्षों की शौर्यात्मा

के कमज़ोर वर्गों के उत्थान के लिए

का विस्तार से वर्णन किया।

मनिराम ने 'पंच परिवर्तन' विषय

पर अपने विचार रखते हुए हिंदू

समाज से सामाजिक समर्पण,

पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी, नारीक

कर्तव्य और पारिवारिक मूल्यों को

अपनाने का आहान किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्लॉक

के अंत में सफल एवं भव्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सनातन के लिए ऑक्सीजन की तरह

बिलारी, अमृत विचार : नारायणनगर देवा मंडल के गांव जरांगों में हिंदू सम्मेलन का आयोजन हुआ। गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संत ऋषिराज महाराज पिलाविष्वर के लिए लैड रेती ने कहा कि समाज में चल रही राष्ट्रीय विरोधी शक्तियों के द्वारा हिंदू समाज को कमज़ोर करने वाले विषय गमीर है। जिसमें लव जिहाद, शूक्र जेहाद आदि शामिल है। हिंदू ऐसे समाज से जागरूक रहना होगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सनातन के लिए आ॒क्सीजन की तरह है। क्षेत्रप्रचारक प्रमुख पदम सिंह ने संघ के 100 वर्ष के उपाय विरोधी स्वीकारी को यात्रा प्रकाश डाला। अपने धर्म संस्कृति और पूर्वजों के प्रति गर्व और गोरा का भाव लाने का सामन मत्र देकर राष्ट्रीय में कार्य करने की दिशा प्रदान की। डॉविट मेजर जेरा भूमिका ने अपने संबोधित करने के लिए पांच प्रमुख विद्वान् परिवर्तन के लिए आ॒पंग प्रमुख विद्वान् परिवर्तन, पर्यावरण, सामाजिक समर्पण का जागरण आदि के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों की तादाद में लग शामिल रहे। आयोजन आरएसएस के वरिष्ठ प्रदाविकारी अधिकारी सिंह के नेतृत्व में किया गया।



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सनातन के लिए ऑक्सीजन की तरह

दिन दहाड़े बाइक सवार बदमाश महिला से पर्स छीन कर फरार राकुरद्वारा, अमृत विचार : पुलिस की निष्क्रियता के चलते लगातार नगर व देहात क्षेत्र में चोरी व छिननी की घटनाएं रुक्ने का नाम नहीं ले रही है। गुरुवार को दिन दहाड़े सुनेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आते समय महाला से बाइक सवार बदमाश झपटा मारकर पर्स छीन कर फरार हो गए।

कोतवाली के गांव पृथ्वीपुर गंगावी निष्क्रिया एक महिला दोपहर 2:30 बजे ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आ रही थी। सुरेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा जसपुर माड़ पर हल्का हुआ तो पीछे जे आरे अज्ञात बाइक सवार बदमाश महिला पर्स छीन कर फरार हो गए। महिला ने शोर मचाया लेकिन तब तक बदमाश पीके से फरार हो चुके थे। महिला ने बताया कि पर्स में 1500 रुपये की नगदी और साने-चाली के जैवरत और एक मोबाइल था। कोतवाली प्रभारी निष्क्रियक मनोज परमार ने बताया कि शिकायत नहीं है।

कोतवाली के गांव पृथ्वीपुर गंगावी

निष्क्रिया एक महिला दोपहर 2:30 बजे ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आ रही थी।

सुरेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा जसपुर माड़ पर हल्का हुआ तो पीछे जे आरे अज्ञात बाइक सवार बदमाश महिला पर्स छीन कर फरार हो गए।

महिला ने शोर मचाया लेकिन तब तक बदमाश

पीके से फरार हो चुके थे। महिला ने बताया कि पर्स में 1500 रुपये की नगदी और साने-चाली के जैवरत और एक मोबाइल था।

कोतवाली प्रभारी निष्क्रियक मनोज परमार ने बताया कि शिकायत नहीं है।

कोतवाली के गांव पृथ्वीपुर गंगावी

निष्क्रिया एक महिला दोपहर 2:30 बजे ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आ रही थी।

सुरेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा जसपुर माड़ पर हल्का हुआ तो पीछे जे आरे अज्ञात बाइक सवार बदमाश महिला पर्स छीन कर फरार हो गए।

महिला ने शोर मचाया लेकिन तब तक बदमाश

पीके से फरार हो चुके थे। महिला ने बताया कि पर्स में 1500 रुपये की नगदी और साने-चाली के जैवरत और एक मोबाइल था।

कोतवाली प्रभारी निष्क्रियक मनोज परमार ने बताया कि शिकायत नहीं है।

कोतवाली के गांव पृथ्वीपुर गंगावी

निष्क्रिया एक महिला दोपहर 2:30 बजे ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आ रही थी।

सुरेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा जसपुर माड़ पर हल्का हुआ तो पीछे जे आरे अज्ञात बाइक सवार बदमाश महिला पर्स छीन कर फरार हो गए।

महिला ने शोर मचाया लेकिन तब तक बदमाश

पीके से फरार हो चुके थे। महिला ने बताया कि पर्स में 1500 रुपये की नगदी और साने-चाली के जैवरत और एक मोबाइल था।

कोतवाली प्रभारी निष्क्रियक मनोज परमार ने बताया कि शिकायत नहीं है।

कोतवाली के गांव पृथ्वीपुर गंगावी

निष्क्रिया एक महिला दोपहर 2:30 बजे ई रिक्शा से ठाकुरद्वारा आ रही थी।

सुरेजनगर मार्ग पर ई रिक्शा जसपुर माड़ पर हल्का हुआ तो पीछे जे आरे अज्ञात बाइक सवार बदमाश महिला पर्स छीन कर फरार हो गए।

महिला ने शोर मचाया लेक



कागज की खोज

मानव सभ्यता के विकास में कागज का आविष्कार एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी घटना माना जाता है। आज जिस कागज को हम सामान्य और दैनिक उपयोग की वस्तु समझते हैं, उसने ज्ञान के संरक्षण, प्रसार और लोकतंत्रीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कागज के आविष्कार से पहले मनुष्य पत्थर, ताप्रपत्र, ताइपत्र, भाजत्र, चम्पड़ और रेशम जैसे माध्यमों पर लिखता था, जो या तो भारी थे, महंगे थे या लंबे समय तक सुरक्षित नहीं रहते थे। इतिहासकारों के अनुसार कागज का आविष्कार 105 ईसवी में चीन में हुआ। इसका श्रेय हान वंश के शाही दरबार के अधिकारी त्साई लुन (Cai Lun) को दिया जाता है। उन्होंने पेड़ की छाल, पुनर्न कपड़, मछली पकड़ने के जाल और बांस जैसे रेशेदार पदार्थों को पानी में गलाकर, पीसकर और सुखाकर कागज बनाने की एक व्यावर्ताक्रिया विधि विकसित की। यह पहले से मौजूद लेखन माध्यमों की तुलना में सस्ता, हल्का और अधिक उपयोगी था। चीन में लंबे समय तक कागज बनाने की तकनीक को गुप्त रखा गया, लेकिन धीरे-धीरे यह ज्ञान अन्य क्षेत्रों तक फैल गया। आठवीं शताब्दी में यह तकनीक अरब दुनिया पहुंची, जहां गवाह और समरक दंड जैसे नगर कागज निर्माण के प्रमुख केंद्र बने। इसके बाद कागज भारत पहुंचा और यहां फारसी व अरबी पांडुलिपियों के लेखन में इसका व्याकरण प्रयोग हुआ। तरहवीं शताब्दी तक कागज यूरोप पहुंच चुका था, जहां बाद में आपेखाने के आविष्कार के साथ यह प्रयोग होता था, जो भारी और महंगे थे। त्साई लुन के इस आविष्कार ने लेखन को सरल बनाया और ज्ञान, शिक्षा तथा प्रशासन के व्यापक प्रसार में हुगली नदी के तट पर बाटी नामक स्थान पर स्थापित किया गया।

वैज्ञानिक के बारे में
त्साई लुन (Cai Lun) चीन के हान राजवंश के समय एक प्रमुख विद्वान् और शाही अधिकारी थे। उन्हें कागज के आविष्कारक के रूप में जाना जाता है। इससे पहले लेखन के लिए बांस की पट्टियाँ और रेशम का प्रयोग होता था, जो भारी और महंगे थे। त्साई लुन के इस आविष्कार ने लेखन को सरल बनाया और ज्ञान, शिक्षा तथा प्रशासन के व्यापक प्रसार में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

अमृत विचार
दृष्टेका

सम्मोहित करता विलक्षण पक्षी

सनविटन

क्या कोई पक्षी अपनी चौंच या नुकीले पंजों का प्रयोग किए बिना भी खूंखार शिकारियों को परास्त कर सकता है?

सनविटन यह सिद्ध करता

है कि भीषण

संकट के समय धैर्य और मनोवैज्ञानिक कौशल ही सबसे अचूक प्रहार साबित होते हैं।



डॉ. कैलाश चंद शेगल, वन्यजीव लेखक, जयपुर

मध्य और दक्षिण अमेरिका के अभेद्य वर्षावनों में, जहां हर आहट एक नए खतरे के लिए केवल शारीरिक शक्ति पर्याप्त नहीं है। इन रहस्यमयी जंगलों में एक ऐसा पक्षी निवास करता है, जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि बुद्धि का सटीक प्रयोग दुनिया के किसी भी घास के द्वितीय से अधिक प्रयोग दुनिया की हो सकता है। प्रकृति ने इसे 'सनविटन' के नाम से जाना है। यह न तो गड़ जैसी शक्ति रखता है और न ही चीते जैसी तीव्र कुर्तुं, फिर भी इसमें एक ऐसा अनुत्ता रणकौशल है, जो बड़े-बड़े शिकारियों को किंकर्तव्यमुद्ध कर देता है। इसकी आत्मरक्षा की यह रणनीति महज जान बचाने की कोशिश भर नहीं है, बल्कि शिकारी के मरिटावक को भ्रमित कर देने वाला एवं विलीन कर देना कि शिकारी की धूम रात तक रहती है। इसकी आत्मरक्षा की यह रणनीति महज जान बचाने की कोशिश भर नहीं है, बल्कि शिकारी के मरिटावक को भ्रमित कर देना वाला एवं विलीन कर देना कि शिकारी की धूम रात तक रहती है।

अदृश्यता का आवरण

प्रकृति में विलीन होना - सनविटन की अत्मरक्षा का प्रमाण हराया है पूर्णतः अदृश्य हो जाना। दर्दी के किनारों पर सुखी परियों और कीचड़ के बीच जब यह पक्षी निश्चल खड़ा होता है, तो इसके द्वारा भूरे पूरे इसे परिवेश के साथ एस कदर एकाकार कर लेते हैं कि कोई अत्यंत निकट से भी गुजर जाए, तो इसे पहचान नहीं सकता। विज्ञान की शब्दाली में इसे 'क्रिटिकल करेशेन' कहते हैं। इसका सीधा अर्थ है क्यों को परिवेश के गांड़ों वृद्ध सर तरह विलीन कर देना कि शिकारी की धूम रात तक रहती है। इसकी आत्मरक्षा की यह रणनीति महज जान बचाने की कोशिश भर नहीं है, बल्कि शिकारी के मरिटावक को भ्रमित कर देना वाला एवं विलीन कर देना कि शिकारी की धूम रात तक रहती है।



भग्न का प्रहार : आंखों का धोखा

असली रोमांच तब प्रारंभ होता है, जब छिपने का विकल्प समाप्त हो जाता है। जैसे ही कोई खूंखा सर्ज या जंगली बिल्ली सनविटन के द्वे में प्रवेश करती है, यह शात पक्षी अन्वानक रौद्र रूप धारण कर लेता है। यह पलक द्वारा करते ही अपने पंखों का एक विशाल पंखे की भाँति फैल देता है। इस क्षणिक रूपांतरण में वह लघु पक्षी एकाएक एक विशाल और डरावने जीव जैसा प्रतीत होने लगता है। उसके पंखों के भीतर नारंगी, लाल और पीले रंगों के सम्मिश्रण से दो विशाल आकृतियाँ उभर आती हैं, जो हूबू हूबू किसी खूंखार शिकारी की धूमकती आंखों जैसी दिखती हैं।



मनोवैज्ञानिक विजय

वैज्ञानिक इन आकृतियों को 'आई-स्पॉट्स' कहते हैं। एक सुलभ शिकारी की तलाश में आया शिकारी, अचानक अपने सम्मुख दो विशाल जलती हुई आंखें देखकर स्वतंत्र रह जाता है। उसे भ्रम होता है कि वह किसी पक्षी को नहीं, बल्कि किसी ऐसे दैत्यकार जीव को देख रहा है, जो स्वयं उसे ही अपना ग्रास बना सकता है। सनविटन यहीं नहीं थमता, वह अपने शरीर को एक विशेष लय में चुकाकर और पंखों को थिरकाकर इस प्रभाव को इतना जीवन्त बना देता है कि शिकारी भय और अनिश्चितता से घिर जाता है। यही एक क्षण सनविटन की विजय सुनिश्चित कर देता है और शिकारी अपनी जान बचाकर वहां से भागने में ही अपनी भलाई समझता है।

जीवन का संदेश

सनविटन की योक्ता, आत्मरक्षा का अर्थ संदेश हिंसा या प्रतिवाप नहीं होता है। हमें जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है। यह सिस्तियाँ हैं। कभी-कभी बिना चौंच चलाए और बिना पंखा मारे, केवल अपनी बुद्धिमत्ता और दृष्टि के छलावे से भी बड़ी जांच जीवन से सहायक होता है। विवाहों की सधनता में आज भी यह पक्षी हमें समरण करता है कि जब संकट विकराल हो, तो धैर्य और मानसिक कौशल ही आपके सबसे अचूक प्रहार सिद्ध होते हैं।

जंगल की दुनिया



वैज्ञानिक फैक्ट

शहद के दीर्घायु होने का विज्ञान

शहद में पानी की मात्रा बेहद कम होती है। आमतौर पर इसमें नमी 16 से 18 प्रतिशत के बीच रहती है, जबकि अधिकांश बैकटीरिया और फॉर्कूट को जीवित रहने और बढ़ने के लिए कहीं अधिक नमी की आवश्यकता होती है। पानी की कमी के कारण सूक्ष्मजीव शहद में पनान नहीं पाते। इसके साथ ही शहद में शर्करा की मात्रा बहुत अधिक होती है, जो लगभग 80 प्रतिशत तक होती है। इतनी अधिक शर्करा के कारण उसमें ऑस्मोटिक दबाव बहुत ज्यादा होता है, जिससे बैकटीरिया और फॉर्कूट की काशिकाओं से पानी बाहर खिंच जाता है और वे निष्क्रिय हो जाते हैं।

शहद की प्रकृति हल्की अम्लीय होती है। इसका pH सामान्यतः 3.2 से 4.5 के बीच रहता है। यह अम्लीय वातावरण अधिकांश रोगजनक सूक्ष्मजीवों के लिए महत्व दिया जाता रहा है।

शहद के दीर्घायु होने का विज्ञान

शहद में पानी की मात्रा बेहद कम होती है। आमतौर पर इसमें नमी 16 से 18 प्रतिशत के बीच रहती है, जबकि अधिकांश बैकटीरिया और फॉर्कूट को जीवित रहने और बढ़ने के लिए कहीं अधिक नमी की आवश्यकता होती है। पानी की कमी के कारण सूक्ष्मजीव शहद में पनान नहीं पाते। इसके साथ ही शहद में शर्करा की मात्रा बहुत अधिक होती है, जो लगभग 80 प्रतिशत तक होती है। इसके बीच रहती है। जबकि अधिक शर्करा के कारण उसमें ऑस्मोटिक दबाव बहुत ज्यादा होता है, जिससे बैकटीरिया और फॉर्कूट की काशिकाओं से पानी बाहर खिंच जाता है और वे निष्क्रिय हो जाते हैं।

शहद के दीर्घायु होने का विज्ञान

शहद में पानी की मात्रा बेहद कम होती है। आमतौर पर इसमें नमी 16 से 18 प्रतिशत के बीच रहती है, जबकि अधिकांश बैकटीरिया और फॉर्कूट को जीवित रहने और बढ़ने के लिए कहीं अधिक नमी की आवश्यकता होती है। पानी की कमी के कारण सूक्ष्मजीव शहद में पनान नहीं पाते। इसके साथ ही शहद में शर्करा की मात्रा बहुत अधिक होती है, जो लगभग 80 प्रतिशत तक होती है। इसके बीच रहती है। जबकि अधिक शर्करा के कारण उसमें ऑस्मोटिक दबाव बहुत ज्यादा होता है, जिससे बैकटीरिया और फॉर्कूट की काशिकाओं से पानी बाहर खिंच जाता है और वे निष्क्रिय हो जाते हैं।

शहद के दीर्घायु होने का विज्ञान

शहद में पानी की मात्रा बेहद कम होती है। आमतौर पर इसमें नमी 16 से 18 प्रतिशत के बीच रहती है, जबकि अध

